ToppersNotes

IAS

सामान्य अध्ययन पेपर - IV

Sierra Innovations Pvt. Ltd.

नैतिकता और अखंडता

विषय सूची	पृष्ठ सं।
नैतिकता	3 - 24
अनैतिकता	25 - 36
नैतिक प्रगति	37 - 50
मूल्य	51 – 57
सार्वजनिक - निजी संबंध	58 - 61
भारत तथा विश्व के नैतिक विचारकों तथा दार्शनिकों का योगदान	62 – 75
: मनु	76 - 81
: चावार्क	82 - 83
: महात्मा गांधी	84 - 99
: सुकरात	102 – 109
: वेस्टन एथिक्स	110 – 113
: प्लेटो	113 – 115
: अरस्तु	116 – 118
: एपिकुरुस	119 – 126
: स्टोइक	127 – 131
: मिल	132 – 138
: कांत	139 – 144
: हेगेल	145 – 160
मनोविज्ञान	161 – 163

नैतिकता और अखंडता

विषय सूची	पृष्ठ सं।
भावनात्मक बुद्धि	164 - 182
मनोवृत्ति	183 - 192
मनोवृत्ति और व्यवहार का सम्बन्ध	193 - 192
मनोवृति के व्यवहार में रूपांतरित होने की प्रक्रिया	193 - 201
मनोवृत्ति के प्रकार्य	202 - 209
संज्ञानात्मक मतभेद	210 - 214
राजनीतिक मनोवृत्तियाँ	215 - 218
नागरिक सेवा के लिए योग्यता और आधार मूल्य	219 - 223

नैतिकता और अखंडता

ETHICS, INTEGRITY AND APTITUDE

Attitude:- किसी विषय, विशेष पर नकारात्मक या सकारात्मक व्यवहार ही "attitude" है।

Aptitude:- किसी व्यक्ति विशेष की क्षमता व रुझान के आधार पर क्षेत्र विशेष मे उपलब्धि की प्राप्ति करना तथा अच्छा प्रदर्शन करना।

- किसी विशेष क्षेत्र में जाने योग्य है या नहीं इसका परीक्षण करना।
- Aptitude ऐसा होना चाहिए जिससे समस्या की गहराई को समझा जा सके।

Intelligency (भावनात्मक समझ):-

किसी दी हुई परिस्थिति में निर्णय लेने की क्षमता 'भावनात्मक समझ' है।

- दी गई परिस्थितियों में उपलब्ध संसाधनों का प्रयोग करके समस्या का हल निकालना 'Intelligency' है।

Emotional Intelligency:-

- दी गई परिस्थितियों में उपलब्ध संसाधनों के साथ दूसरों के भावनात्मक रूप को समझकर समस्या का हल निकालना Emotional Intelligency कहते हैं।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

● दूसरे की मनःस्थिति को समझकर अधिकतम लाभ प्राप्त करना और समस्या का समाधान निकालना।

Topic (5)

"डेनियल गोलमेन" ⇒ "Emotional Intelligence", साधारणतः intelligence की तुलना मे ज्यादा उपयोगी है।

"थॉमस हॉब्स" :- "प्रत्येक मनुष्य स्वार्थी प्राणी है"

⇓

"अगर कोई व्यक्ति आपके लिए हाथ भी उठाता है तो निश्चय ही उसका स्वार्थ उसमे निहित है"

⇓

इनका मानना है कि माँ भी शुद्ध रूप से स्वार्थी है।

"कार्ल मार्क्स" :- का मानना है कि "मनुष्य मूल रूप से परमार्थी है"

पाठ्यक्रम का क्रम

Topic → 1, 5
Topic → 2, 4
Topic → 3
Topic → 6, 7

संभावित प्रश्न :-

प्रश्न-1 नैतिकता से आप क्या समझते है यह आत्मनिष्ठ होती है या वस्तुनिष्ठ ?

प्रश्न-2 नैतिक प्रतिमान किन आधारो पर निर्धारित होते है। नैतिक प्रतिमान देश और काल के सापेक्ष होते है या उनसे मुक्त ? कुछ लोग मूल्य को शाश्वत मानते है जबकि कुछ अन्य के अनुसार मूल्य परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहते है इस सम्बन्ध में आपका क्या राय है।

प्रश्न-3 किसी समाज के लिए नैतिक प्रतिमान / नैतिक मानदण्ड या नैतिक व्यवस्था क्यो आवश्यक है क्या यह मानना पर्याप्त नहीं है कि हर व्यक्ति विवेकशील होता है और वह स्वंय अपने लिए वांछित कर्मो का निर्धारण कर सकता है।

प्रश्न-4 क्या हमारे सभी कार्य नैतिक या अनैतिक होते है। या कुछ कार्य ऐसे भी होते है जो न नैतिक हो और न अनैतिक अपने जीवन के उदाहरण देकर स्पष्ट करे

प्रश्न-5 सेक्स की स्वतन्त्रता से आप क्या समझते है नैतिकता को समझने तथा किसी व्यक्ति के नैतिक कर्मो के मूल्यांकन के लिए यह क्यो जरूरी है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

प्रश्न :-6 नैतिक होने और धार्मिक होने में क्या सम्बन्ध है। क्या बिना नैतिक हुए धार्मिक और बिना धार्मिक हुए नैतिक हुआ जा सकता है। उदाहरण देकर स्पष्ट करे।

प्रश्न :-7 प्रत्येक नैतिक व्यवस्था और नैतिक मानदण्ड गहरे अर्थों में अनैतिक होता है उदाहरण देकर इस कथन की व्याख्या करे।

प्रश्न :-8 नैतिक व्यवस्था के व्यक्ति और समाज पर क्या परिणाम होते है ये सकारात्मक होते है या नकारात्मक उदाहरण देकर सिद्ध करे।

प्रश्न :-9 मूल्यों के विकास में परिवार समाज तथा शिक्षा संस्थाओं की क्या भूमिका होती है। अपने जीवन के उदा० देकर स्पष्ट करे।

यह हर समाज में होता है।

Ethics के हिन्दी में दो अर्थ है।

- नैतिकता/ नैतिक व्यवस्था → Moral order → Ethics का पर्यायवाची शब्द है
- नीतिशास्त्र → यह हर समाज में हो भी सकता है और नहीं भी
  - यह शब्द दर्शन का भाग है
  - ⇓ दर्शन की 3-शाखा मानी जाती है।
    1. ज्ञान मीमांसा
    2. तत्वमीमांसा
    3. नीतिमीमांसा

सांस्कृतिक सापेक्षवाद :→ की शुरुवात 1920 के आस-पास मानी जाती है।

Ethno-centrism :→ "स्वजाति व स्वसमूह केन्द्रवाद" इसका अर्थ है कि जो हमारे यहाँ होता है वह सही है और सब गलत है। ← "जरूरत से ज्यादा विश्वास होता है।"

Cultural Relativism :→ प्रत्येक संस्कृति विशिष्ट है हमे संस्कृति का मूल्यांकन उसको समझकर किया जाए तथा उसमे लचीला पन हो।

Xeno-Centrism :→ "परजाति केन्द्रवाद" दूसरे समूहो को केन्द्र में रखकर अपने समूह का आकलन करना।

⇓

जरूरत से कम विश्वास होता है

⇓

अपना मूल्यांकन किसी दूसरे के आधार पर करना

1955 - Hindu Code Bill
उत्तराधिकार अधिनियम

toppersnotes
Unleash the topper in you

" संकल्प स्वातंत्र्यता ~~की समस्या~~ " (freedom of will)

⇓

(संकल्प स्वतन्त्रता)

⇒ जो निर्णय करते समय स्वाधीनता हो कि मैं निर्णय करु या नहीं अर्थात निर्णय करने की स्वतन्त्रता हो।

ex:- निर्णय करने से पहले हमे सामने वाले की परिस्थिति में खुद को रखकर देखना चाहिए।

" किसी व्यक्ति को नैतिक और अनैतिक मूल्यो में निर्णय करने की क्षमता को 'संकल्प स्वतन्त्रता' कहते है। "

'सिग्मन फ्रायड के अनुसार' → " ऐसा कोई मनुष्य नहीं है कि वह मन के स्तर पर भी नैतिक हो "

बिना Action के हम किसी के नैतिक या अनैतिक होने का दावा नहीं कर सकते है।

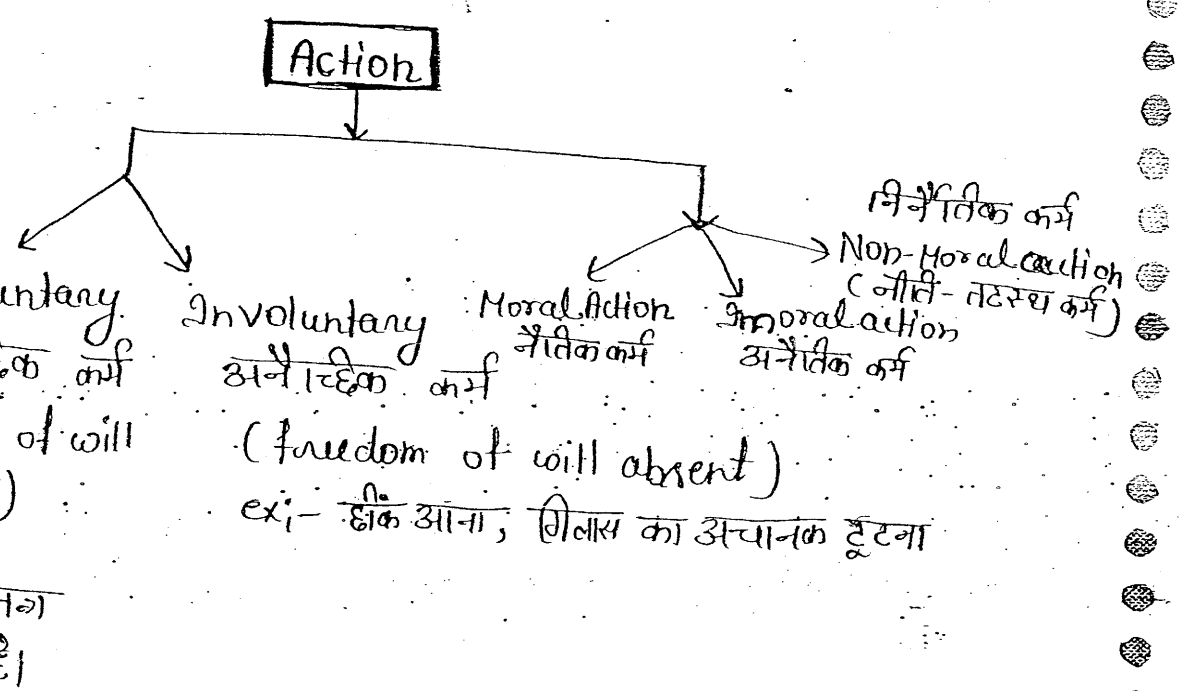

Voluntary :- दो भागों में बाँटा है।

Conseous Voluntery action (सायास, सजग कर्म)

Habitual Voluntery action (आदतन कर्म)

→ यह action भी शुरुआत में conseous action माना जाता है

Moral Action (नैतिक कर्म) :-

◉ उचित कर्म

→ ये दोनों Voluntory action है।

Note

Qustion :- मूल्य शास्वत होते है। या समय के मूल्य के साथ बदल जाते है।

Ans बदल जाते है।

Immoral Action (अनैतिक कर्म) :-

अनुचित कर्म

Non-Moral Action (नीति तटस्थ कर्म) :- → (यह involuntary action में आता है।)

* जिसमे freedom of will का (absent) अभाव हो।
* यह न तो नैतिक है और न ही अनैतिक।
* उचित और अनुचित से परे।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⇒ **संकल्प की स्वतन्त्रता :-**

नैतिकता के क्षेत्र में संकल्प की स्वतन्त्रता एक आधारभूत ~~आधार~~ धारणा है इसका अर्थ है जो व्यक्ति ने कर्म किया है उसका चयन करने की स्वाधीनता उसके पास थी।

"**दूसरे शब्दों में :-**

यदि किसी व्यक्ति ने कोई कार्य सोच समझकर अपने पूरे होशो-हवास में किया है तो हम कहेंगे की उसके पास संकल्प की स्वतन्त्रता थी। महान जर्मन दार्शनिक 'कांट' ने संकल्प की स्वतन्त्रता को नैतिक व्यवस्था के तीन अनिवार्य तत्वों में से एक बताया है।

व्यक्ति जो भी कार्य करता है वे या तो स्वैच्छिक (Voluntary) या अनैच्छिक (Involuntary)

स्वैच्छिक कर्म वे है जिनके मूल मे संकल्प की स्वतन्त्रता विद्यमान थी। जबकि अनैतिक कर्मों के संबन्ध में माना जाता है कि वे संकल्प स्वातंत्र्य से रहित थे अनैच्छिक कर्मों में शामिल है –

① छोटे बच्चों के कर्म
② विक्षिप्त व्यक्ति के कर्म
③ प्रतिक्षेप (Reflex Action) ex:- छींकना, चौंकना।
④ अचेतन या सम्मोहन की स्थिति में किये गये कर्म
⑤ प्रवृत्तिमूलक कर्म, ex:- डरना।
⑥ दबाव या बाध्यता में किये गये कर्म
⑦ आकस्मिक रूप से किये गये कर्म, ex:- हाथ से गिलास छूटना।

अचानक होने वाली क्रियाये
↓
Reflex Action

संकल्प की स्वतन्त्रता थी या नहीं यह निर्धारित करना बहुत जरूरी होता है क्यों कि अगर यह थी या नहीं हम उस कर्म को नैतिक या अनैतिक (Immoral) नहीं कह सकते इसे Non-Moral या नीतिनिरपेक्ष ही कहना होगा।

संकल्प की स्वतन्त्रता थी या नहीं इसका फैसला निम्नलिखित कसौटियों से हो सकता है।

① कार्य करने की शारीरिक क्षमता की उपस्थिति।
② कार्य करने की मानसिक क्षमता।
③ कर्म से सम्बन्धित ऐसे विकल्प होने चाहिए कि वह किसी कर्म को करे या न करे का निर्णय कर सकता हो।

नियतिवाद (Determinism) :-

जब कुछ पहले से ही पता हो।

Question: नैतिक व्यवस्था की जरूरत क्यों होती है?

'एथिक्स'
॥
ऐसे ही लिखना है।

'एथिक्स' ⇒ नैतिक व्यवस्था के रूप में व्यक्त करते हुए लिखना है।
↓
दर्शन वाले भाग को कम दिखाना है।

'एथिक्स' → दर्शन में इसे Axiology भी कहते है। (मूल्य मीमांसा)
→ सामाजिक नैतिक व्यवस्था (Social moral order)

⇒ 'एथिक्स' शब्द का प्रयोग दो संदर्भों में होता है पहले संदर्भ में यह दर्शन शास्त्र की एक शाखा है जिसे नीतिशास्त्र या नीतिमीमांसा कहते है। मूल्य मीमांसा (Axiology) भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होने वाला शब्द है दूसरे अर्थ में नैतिकता का अर्थ नैतिक नियमों व प्रतिमानों से है जो किसी भी समाज में नैतिक व्यवस्था को बनाये रखने के लिए प्रयोग में आते है

यदि एथिक्स को दर्शन शास्त्र की शाखा के रूप मे देखे तो इसकी महत्वपूर्ण विशेषताए निम्नलिखित है,—

① यह एक मानकीय विषय है ना कि वर्णनात्मक (Normative)
इसका अर्थ है कि यह नैतिक विज्ञान की तरह

Toppersnotes
Unleash the topper in you

सिर्फ अपने जगत की व्याख्या नहीं करता या सिर्फ 'क्या है' का उत्तर नहीं देता। बल्कि यह भी बताता है कि 'क्या होना चाहिए'। दूसरे शब्दों में यह समाज का यथार्थ बताने के साथ-साथ उसके लिए आदर्शों को भी गढ़ता है।

नीतिशास्त्र समाज में रहने वाले सामान्य वयस्कों के ऐच्छिक कर्मों तक अपना विश्लेषण सीमित रखता है इसमें तीन बातें महत्वपूर्ण है:—

① नीति शास्त्र का सम्बंध सिर्फ सामाजिक मनुष्यों से है यदि, हम कल्पना करें कि कोई मनुष्य समाज से अलग रहता है तो वह नीति शास्त्र के दायरे में नहीं आयेगा।

② केवल सामान्य वयस्कों के कर्मों का मूल्यांकन किया जाएगा बहुत छोटे बच्चों या असामान्य / विक्षिप्त वयस्कों को इस दायरे में नहीं रखा जायेगा।

③ नीति शास्त्र सिर्फ ऐच्छिक कर्मों अर्थात आचरण (Conduct) का मूल्यांकन करता है। ऐसे कर्मों का नहीं जो अनैच्छिक हो या संकल्प की स्वतंत्रता के अभाव में किये गये हो।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⇒ 'एथिक्स' का दूसरा अर्थ ज्यादा महत्वपूर्ण और व्यापक है इस अर्थ में नैतिकता या नैतिक व्यवस्था विश्व के प्रत्येक समाज में देखी जा सकती है इस नैतिकता या नैतिक व्यवस्था के प्रमुख लक्षण निम्नलिखित है :-

ex:- भूल
↓
error
↓
"जो पूरी तरह बिना किसी जानकारी के हुआ वह भूल है।"

पाप
(sin)
↓
"माना कि यदि सैर करते समय कोई मेंढक पैर के नीचे आकर मर जाए तो वह 'पाप' है।"

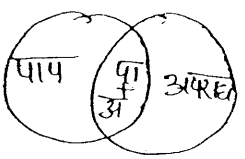

अपराध
(crime)
↓
यदि Red light cross कर जाना अपराध है।

→ जो नैतिक रूप से गलत है वो 'पाप' है।

→ कानूनी रूप से गलत है वो 'अपराध' है।

→ जो नैतिक व कानूनी रूप से गलत है वह 'पाप + अपराध' है।

→ यदि पाप किया है तो मन में 'guilt feeling' (अपराध-बोध) होगा

→ नैतिकता अभ्यास से आती है ना कि जन्मजात होती है।

(1) नैतिक व्यवस्था या नैतिकता अपनी प्रकृति में सार्वभौमिक (Universal) व सार्वकालिक है। किन्तु सिर्फ इस अर्थ में कि यह प्रत्येक मानव समाज में पायी जाती है आदिम से आदिम जन जातीय समाज से लेकर अधिकतम विकसित समाज में इस व्यवस्था की उपस्थिति देखी जा सकती है।

(2) नैतिकता मनुष्य की जन्मजात या वंशानुगत विशेषता नहीं है इसे सीखना पड़ता है जब कठोर अभ्यास से कोई नैतिक मूल्य व्यक्ति के जीवन का सामान्य हिस्सा बन जाता है तो उसे सद्गुण (Virtue) कहते हैं। यदि व्यक्ति नैतिकता का अभ्यास ना करे और अपनी प्रवृत्तियों के वशीभूत हो जाए तो उसमें दुर्गुणों (Vices) का विकास होता है।

(3) नैतिकता एक गत्यात्मक (dynamic) अवधारणा है अर्थात देश काल परिस्थितियों से प्रभावित होती है कुछ नैतिक मूल्य ऐसे हैं। जो लगभग हर समाज में हमेशा माने जाते हैं- ईमानदारी, शांति सहयोग आदि जबकि कुछ नैतिक मूल्य ऐसे होते हैं जो समाज की विशेष परिस्थितियों से निर्धारित होते हैं। जैसे आदिम या पिछड़े समाजों में साहस और वीरता जैसे मूल्य केन्द्र में होते हैं जबकि विकसित या सम्पन्न समाजों में शांति या सहअस्तित्व व सहिष्णुता जैसे मूल्य प्रमुख हो जाते हैं।

④ हर नैतिक व्यवस्था अपनी प्रकृति में परामर्श देने वाली होती है अर्थात वह बताती है कि विभिन्न परिस्थितियों में प्रत्येक व्यक्ति को क्या करना चाहिए और क्या नहीं।

⑤ नैतिक व्यवस्था अनिवार्यतः कानूनी व्यवस्था के समानान्तर नहीं होती ऐसा हो सकता है कि किसी कृत्य को नैतिक व्यवस्था गलत माने किन्तु कानून गलत ना माने जैसे पशु हिंसा तथा पेड़-पौधों के प्रति गलत व्यवहार दूसरी ओर ऐसा भी हो सकता है कि कानून किसी कृत्य को अपराध घोषित करे किन्तु समाज की ~~कानून~~ नैतिकता उसे गलत न माने जैसे कुछ देशों में बहुपत्नी व दहेज,

→ प्रथा एक समय तक सती प्रथा भी कानूनी दृष्टि से अपराध थी जबकि समाज के एक बड़े हिस्से की उसमें नैतिक आस्था बनी हुई थी

⑥ नैतिक व्यवस्था दो प्रकार के दबावों से संचालित होती है आन्तरिक तथा बाह्य आन्तरिक दबाव का अर्थ इस बात से है कि बच्चों में बचपन से ही ऐसे मूल्य और संस्कार भरे जाते हैं कि